विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय-हिंदी ***दिनांक-19/07/2020***
वर्ग-चतुर्थ ***विषय-शिक्षिका— नीतू कुमारी***
(N.C.E.R.T. पर आधारित)
पाठ-8 (सच्चाई की खेती)

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने 'सच्चाई की खेती' कहानी का आधा भाग पढ़ा। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपको जो अध्ययन-सामग्री दी जाती है उसे आप पूरे मनोयोग से पढ़ते होंगे। आज की कक्षा में उसी कहानी का शेष भाग पढ़ना है। जो कि इस प्रकार है:—

वह अकबर से बोला , "महाराज! आपके आदेश के अनुसार मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था, पर एक आश्चर्यजनक घटना ने मुझे आदेश का उल्लंघन करने पर मजबूर कर दिया। मैं शहर से बाहर जा रहा था कि एक यात्री ने मुझे ये ख़ास गेहूँ के दाने दिए हैं। इन्हें बोने से हमें सोने की अच्छी फ़सल मिल सकती है।"

बादशाह अकबर गेहूँ के दानों को देखकर आश्चर्यचकित हो गया और बोला, "क्या यह सचमुच सम्भव है।"

"महाराज! मैं निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता, पर हम कोशिश तो कर सकते हैं। मेरे पास थोड़ी-सी उपजाऊ भूमि है। यदि आप इच्छुक हों तो हम इसी पूर्णमासी की रात को इन दानों को बो देंगे," बीरबल बोला।

बादशाह सहमत हो गया। पूर्णमासी की रात को सभी एक स्थान पर हो गये। "अब बीरबल सोने के दानों को बोना शुरू करो," बादशाह ने कहा।

"महाराज, मैं इन्हें नहीं बो सकता, क्योंकि मैंने अपने जीवन में कई छोटे-छोटे झूठ बोले हैं। इन दानों को केवल वही व्यक्ति बो सकता है जिसने कभी कोई झूठ न बोला हो। मेरे अलावा कोई भी दरबारी इन्हें बो सकता है, क्योंकि उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला।"

बीरबल की बात सुनते ही सभी दरबारी सकपकाकर पीछे हट गए। वे जानते थे कि उन्हें उनके बोए हुए दानों से अंकुर नहीं निकलेंगे। अब बीरबल ने अकबर से कहा "महाराज! अब अकेले सच्चे व्यक्ति आप ही बचे हैं। अतः आप ही इन दानों को बाई सकते हैं।"

"बीरबल, मैं भी इन दानों को नहीं बो सकता क्योंकि बचपन में मैंने भी कई बार झूठ बोला है। शायद हमें कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिल पाएगा जिसने अपने जीवन में कभी झूठ न बोला हो।"

तब बादशाह अकबर को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने बीरबल और रानी को क्षमा कर दिया और रानी को आदरपूर्वक महल में वापस बुला लिया।

बच्चों,अध्ययन, सामग्री को पढ़कर समझने का प्रयास करें।

<u>गृहकार्य</u> :—-
बच्चों, पेज नं- 49 में दिए गए अभ्यास का प्रश्न संख्या-1 बनाएँ।